गीता का कर्मयोग लोक जीवन में मानवीय मूल्यों का आधार है --आचार्य कुंज बिहारी शुक्ला।

बकेवर, 8 दिसंबर । कर्म योग का प्रतिनिधित्व करने वाला आदिग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता मानव जीवन का आधारभूत स्तंभ है , इसका स्मरण और वाचन मानवीय मूल्यों का आधार है । उक्त उदबोधन जनता कॉलेज बकेवर के संगोष्ठी सभागार में आयोजित गीता जयंती महोत्सव पर आयोजित गोष्ठी में श्री बद्रीश जी महाराज के शिष्य आचार्य श्री कुंज बिहारी शुक्ल धर्म सेवा संघ श्री धाम वृंदावन ने देते हुए कहा कि समृद्ध संस्कारों से ही मनुष्य और उसकी संतति का अस्तित्व संभव है ,गीता लोक-जीवन में उत्कृष्टता के साथ निर्वहन करना सिखाती है । गीता जीवनरूपी कुरुक्षेत्र में अर्जुन की तरह संदेह वाले प्रत्येक व्यक्ति का मार्गदर्शन करती है,भारतवर्ष सदियों से प्रकृति और समाज के मध्य संतुलन के लिए नदियों वनस्पतियों और मातृभूमि का पूजक और आराधक रहा है, छात्र जीवन में पसंदीदा कौशल पर ईमानदारी से किया गया निरंतर लक्ष्य हेतु ध्यानकेंद्रण लक्ष्य तक पहुंचाता है। हमें गुरुजनों के लिए अर्जुन जैसा जिज्ञासु छात्र बनना चाहिए ,तभी जीवन पथ के संघर्ष में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। प्राचार्य डॉ राजेश किशोर त्रिपाठी ने मुख्य वक्ता आचार्य कुंज बिहारी शुक्ल का स्वागत करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि पुरातन काल से हमारे भारतीय संस्कारों द्वारा ही भारतवर्ष की समृद्धशाली पहचान आज वैश्विक पटल पर स्थापित है ,आज का छात्र आगामी कल के राष्ट्र जीवन का प्रतिनिधि व्यक्तित्व है। गोष्ठी में डॉ नलिनी शुक्ला ,डॉ ज्योति भदौरिया , डॉ. इन्दु बाला मिश्र,डॉ मनोज यादव , डॉ ब्रह्मा नंद,डॉ धर्मेंद्र कुमार ,डॉ अभिषेक सिंह, कुलदीप अवस्थी, पवन सक्सेना, अजित अग्निहोत्री, डॉ विकास अग्निहोत्री, डॉ शैली यादव, अजय शर्मा,अविनाश तिवारी, सुनील शुक्ला, मो. राशिद, नूरुल हसन ,इरम सलीम, आकाश चौधरी आदि सहित कालेज परिवार की उपस्थिति एवं सहयोग रहा |कार्यक्रम का संचालन अश्वनी कुमार मिश्र द्वारा किया गया।

गीता का कर्मयोग लोक जीवन में मानवीय मूल्यों का है आधारः आचार्य कुंज बिहारी शुक्ला

चेतना कार्यालय

बकेवर। कर्म योग का प्रतिनिधित्व करने वाला आदिग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता मानव जीवन का आधारभूत स्तंभ है, इसका स्मरण और वाचन मानवीय मूल्यों का आधार है । उक्त उदबोधन जनता कॉलेज बकेवर के संगोष्ठी सभागार में आयोजित गीता जयंती महोत्सव पर आयोजित गोष्ठी में श्री बद्रीश जी महा-राज के शिष्य आचार्य श्री कुंज बिहारी शुक्ल धर्म सेवा संघ श्री धाम वृंदावन ने देते हुए कहा कि समृद्ध संस्कारों से ही मनुष्य और उसकी संतति का अस्तित्व संभव है,गीता लोक-जीवन में उत्कृष्टता के साथ निर्वहन करना सिखाती है। गीता जीवनरूपी कुरुक्षेत्र में अर्जुन की तरह संदेह वाले प्रत्येक व्यक्ति का मार्गदर्शन करती है,भारतवर्ष सदियों से

प्रकृति और समाज के मध्य संतुलन के लिए नदियों वनस्पतियों और मातृभूमि का पूजक और आराधक रहा है, छात्र जीवन में पसंदीदा कौशल पर ईमानदारी से किया गया निरंतर लक्ष्य हेतु ध्यानकेंद्रण लक्ष्य तक पहुंचाता है। हमें गुरुजनों के लिए अर्जुन जैसा जिज्ञासु छात्र बनना चाहिए ,तभी जीवन पथ के संघर्ष में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। प्राचार्य डॉ राजेश किशोर त्रिपाठी ने मुख्य वक्ता आचार्य कुंज बिहारी शुक्ल का स्वागत करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि पुरातन काल से हमारे भारतीय संस्कारों द्वारा ही भारतवर्ष की समृद्धशाली पहचान आज वैश्विक पटल पर स्थापित है ,आज का छात्र आगामी कल के राष्ट्र जीवन का प्रतिनिधि व्यक्तित्व है। गोष्ठी में डॉ नलिनी शुक्ला ,डॉ ज्योति भदौरिया , डॉ. इन्दु बाला मिश्र,डॉ मनोज यादव , डॉ धर्मेंद्र कुमार ,डॉ अभिषेक सिंह, कुलदीप अवस्थी, डॉ विकास अग्निहोत्री, डॉ शैली यादव, अजय शर्मा,अविनाश तिवारी, सुनील शुक्ला, मो. राशिद, नूरुल हसन ,इरम सलीम आदि सहित कालेज परिवार की उपस्थिति एवं सहयोग रहा `कार्यक्रम का संचालन अश्वनी कुमार मिश्र द्वारा किया गया।

गीता मानव जीवन का आधार स्तंभ

गीता जयंती महोत्सव पर जनता कॉलेज में हुई संगोष्ठी

संवाद न्यूज एजेंसी

बकेवर। कर्म योग का प्रतिनिधित्व करने वाला आदिग्रंथ श्रीमद्भागवत गीता मानव जीवन का आधार स्तंभ है। इसका स्मरण और वाचन मानवीय मूल्यों का आधार है। यह बात धर्म सेवा संघ श्री आचार्य कुंज बिहारी शुक्ल ने गुरुवार को जनता कॉलेज के सभागार में गीता जयंती महोत्सव पर आयोजित संगोष्ठी में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि समृद्ध संस्कारों से ही मनुष्य और उसकी संतति का अस्तित्व संभव है। गीता लोक-जीवन में उत्कृष्टता के साथ

संगोष्ठी को संबोधित करते आचार्य कुंज बिहारी शुक्ला। संवाद

निर्वहन करना सिखाती है। गीता जीवनरूपी कुरुक्षेत्र में अर्जुन की तरह संदेह वाले प्रत्येक व्यक्ति का मार्गदर्शन करती है।

भारतवर्ष सदियों से प्रकृति और समाज के मध्य संतुलन के लिए नदियों वनस्पतियों और मातृभूमि का पूजक और आराधक रहा है। छात्र जीवन में पसंदीदा कौशल पर ईमानदारी से किया गया। कहा कि निरंतर लक्ष्य के लिए ध्यानकेंद्रण कर लक्ष्य तक पहुंचाता है। हमें गुरुजनों के लिए अर्जुन जैसा जिज्ञासु छात्र बनना चाहिए। तभी जीवन पथ के संघर्ष में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

संगोष्ठी में प्राचार्य डॉ. राजेश किशोर त्रिपाठी, डॉ. नलिनी शुक्ला, डॉ. ज्योति भदौरिया, डॉ. इंदु बाला मिश्र,डॉ. मनोज यादव, डॉ. धर्मेंद्र कुमार, डॉ. अभिषेक सिंह आदि उपस्थित रहे। संचालन अश्वनी कुमार मिश्र ने किया।

गीता का कर्मयोग लोक जीवन में मानवीय मूल्यों का आधार

संवादसूत्र, बकेवर: कर्मयोग का प्रतिनिधित्व करने वाला आदिग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता मानव जीवन का आधारभूत स्तंभ है। इसका स्मरण और वाचन मानवीय मूल्यों का आधार है। यह उद्बोधन जनता कालेज के संगोष्ठी सभागार में आयोजित गोष्ठी में आचार्य कुंज बिहारी शुक्ल धर्म सेवा संघ श्रीधाम वृंदावन ने देते हुए कहा कि समृद्ध संस्कारों से ही मनुष्य और उसकी संतति का अस्तित्व संभव है।

उन्होंने कहा कि गीता लोक-जीवन में उत्कृष्टता के साथ निर्वहन करना सिखाती है। गीता जीवनरूपी कुरुक्षेत्र में अर्जुन की तरह संदेह वाले प्रत्येक व्यक्ति का मार्गदर्शन करती है। भारतवर्ष सदियों से प्रकृति और समाज के मध्य संतुलन के लिए नदियों वनस्पतियों और मातृभूमि का पूजक और आराधक रहा है। छात्र जीवन में पसंदीदा कौशल पर ईमानदारी से किया गया निरंतर लक्ष्य हेतु ध्यानकेंद्रण लक्ष्य तक पहुंचाता है। प्राचार्य डा. राजेश किशोर त्रिपाठी ने कहा कि पुरातन काल से भारतीय संस्कारों द्वारा ही भारतवर्ष की समृद्धशाली पहचान आज वैश्विक पटल पर स्थापित है। गोष्ठी में डा. नलिनी शुक्ला, डा. ज्योति भदौरिया, डा. इन्दुबाला मिश्र, डा. मनोज यादव, डा. धर्मेंद्र कुमार, डा. विकास अग्निहोत्री, डा. शैली आदि की उपस्थिति रही।

गीता का कर्मयोग लोक जीवन में मानवीय मूल्यों का आधार है : आचार्य कुंज बिहारी शुक्ला

युवराज सिंह चौहान

बकेवर (इटावा)। कर्म योग का प्रतिनिधित्व करने वाला आदिग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता मानव जीवन का आधारभूत स्तंभ है, इसका स्मरण और वाचन मानवीय मूल्यों का आधार है। उक्त उदबोधन जनता कॉलेज बकेवर के संगोष्ठी सभागार में आयोजित गीता जयंती महोत्सव पर आयोजित गोष्ठी में श्री बद्रीश जी महाराज के शिष्य आचार्य श्री कुंज बिहारी शुक्ल धर्म सेवा संघ श्री धाम वृंदावन ने देते हुए कहा कि समृद्ध संस्कारों से ही मनुष्य और उसकी संतति का अस्तित्व संभव है,गीता लोक-जीवन में उत्कृष्टता के साथ निर्वहन करना सिखाती है।

गीता जीवनरूपी कुरुक्षेत्र में अर्जुन की तरह संदेह वाले प्रत्येक व्यक्ति का मार्गदर्शन करती है, भारतवर्ष सदियों से प्रकृति और समाज के मध्य संतुलन के लिए नदियों वनस्पतियों और मातृभूमि का पूजक और आराधक रहा है, छात्र जीवन में पसंदीदा कौशल पर ईमानदारी से किया गया निरंतर लक्ष्य हेतु ध्यानकेंद्रण लक्ष्य तक पहुंचाता है। हमें गुरुजनों के लिए अर्जुन जैसा जिज्ञासु छात्र बनना चाहिए, तभी जीवन पथ के संघर्ष में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। प्राचार्य डा. राजेश किशोर त्रिपाठी ने मुख्य वक्ता आचार्य कुंज बिहारी शुक्ल का स्वागत करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि पुरातन काल से हमारे भारतीय संस्कारों द्वारा ही भारतवर्ष की समृद्धशाली पहचान आज वैश्विक पटल पर स्थापित है, आज का छात्र आगामी कल के राष्ट्र जीवन का प्रतिनिधि व्यक्तित्व है। गोष्ठी में डा. नलिनी शुक्ला, डा. ज्योति भदौरिया, डा. इन्दु बाला मिश्र, डा. मनोज यादव, डा. धर्मेंद्र कुमार, डा. अभिषेक सिंह, कुलदीप अवस्थी, डा. विकास अग्निहोत्री, डा. शैली यादव, अजय शर्मा, अविनाश तिवारी, सुनील शुक्ला, मो. राशिद, नूरुल हसन, इरम सलीम आदि सहित कालेज परिवार की उपस्थिति एवं सहयोग रहा द्यकार्यक्रम का संचालन अश्वनी कुमार मिश्र द्वारा किया गया।